क्या इंसान था वह !

मेजर जनरल नीलेन्द्र कुमार

लखनऊ में शहीद स्मारक के समीप उस स्थान से गुज़रते समय कदम कुछ थक से जाते हैं। गति धीमी हो जाती है और अनायास सामने वह दृश्य आ जाता है, जब पिछले वर्ष 14 जनवरी रात को मेरे मामा ;पत्राकार सुरेन्द्र चतुर्वेदीद्ध की एक स्कूटर दुर्घटना में यहॉ पर मृत्यु हुई थी।

पिता सुरेन्द्र जी एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। व्यक्तित्व में साहित्यिक, कलात्मक एवं बौद्धिक गुणों का एक अनूठा समावेश था। काव्य का क्षेत्रा हो या हिन्दी पत्राकारिता, खेल चित्राकारी हो या टी0वी0 रिर्पोटिंग, राजनीति के दॉव–पेंच हों या नाट्य रंगमंच – इन सब पर उनका समान अधिकार था। संगीत में उनकी गहरी पैठ थी। मृत्यु से कुछ ही दिन पहले उन्होंने लखनऊ में नबावी अदन पर कार्य आरम्भ किया था। एक चलचित्रा की कथा की रूपरेखा भी उन्होंने अपनी अंतिम बम्बई यात्राा के दौरान एक निर्माता निर्देशक के सामने रखी थी, जिसे वे एक ईरान के फनकार के सहयोग से बनाना चाहते थे।

कुछ वर्ष पहले ही उनका रुझान तैल चित्राों की ओर हुआ थी। उसके बाद वह पूरी तरह से मन लगाकर चित्राकारी में लग गए थे। अगले तीन–चार वर्षों में उन्होंने सैकड़ों चित्रा बनाए। सूखे रंग एवं कलम का प्रयोग करते हुए स्याही के साथ उन्होंने बहुत से चित्रा बनाए। उनकी चित्राकारिता आधुनिक शैली की थी। एब्सट्रैक्ट थीम पर रंगों का सजीव प्रयोग उनके केनवस पर देखते ही बनता था। उनके चित्राों का विषय सामयिक जीवन पर आधारित था।

लखनऊ में काफी हाऊस में उनके बाद एक सूनापन सा है। उनकी पेज पर होने वाली उस बुद्धिजीवी वार्तालाप एवं मुक्त अट्हास की कभी खटकती है। अपने मृत्यु के चन्द दिन पहले एक शाम को अपनी मित्रा मंडली से उठकर घर चलते उन्होंने ये पंक्तियॉ सुनाईं थीं –

अकेला पर आबाद कर देता हूँ वीराना,
बहुत रोयेगी मेरे जाने के बाद शामे तन्हाई।

काफी हाऊस की मेज पर बैठे–बैठे उन्होंने अपनी अधिकांश कविताऍं लिखी थीं। कागज़ के छोटे टुकड़ों पर या सिगरेट के पैकेट पर लिखी इन कविताओं को वहीं पर अपनी मित्रा मंडली को सुनाने के बाद वे यदि याद रहा तो अपनी फाइल में संग्रहीत करवाने के लिए दे देते थे। उनकी ये कविताएं हास्य एवं व्यंग्य से परिपूर्ण थीं। इसके माध्यम से उन्होंने राजनीतिज्ञों एवं आधुनिक सामाजिक व्यवस्था पर तीखी चोट की है।

अपने प्रारम्भिक जीवन में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के वे एक जाने माने अभिनेता रहे थे। नाट्य रंगमंच पर उनका अभिनय तथा बाद में ब्रिटेन जाने पर बी0बी0सी0 पर उनका प्रदर्शन बहुत लोकप्रिय रहा था। बाद में उन्होंने लखनऊ में कई बार स्टेज पर आकर विभिन्न समारोहों में उदीप्त हो रहे दर्शकों को अपनी प्रतिभा से शान्त किया था। आश्चर्य की बात यह है कि इसके उपरांत भी उनमें आत्मप्रदर्शन

नाममात्रा को भी नहीं था। अपने लिए रुपये पैसे या पद की आकांक्षा उनमें कभी भी नहीं थी। स्वयं की सुख–सुविधा पर उन्हें बिल्कुल ध्यान नहीं था। रेशमी या लखनऊ के चिकन के कुर्ते में, अलीगढ़ी पायजामा में ठिगने कद का वह पत्राकार अवध को, रेशमी घुंघराले बाल व मोटे लाल चौड़े माथे पर पसीने की कुछ बूंदें सभ्यता का बेजोड़ नमूना था। बड़ी सम्मोहक ऑखें और सिर एक ओर को हल्का झुका हुआ। जो कोई एक बार भी उस मस्त एवं दरियादिल इन्सान से मिला, वह उन्हें कभी भुला नहीं पाएगा।